WLC15-2-1 HI

यीशु के जीवन, मृत्यु और जी उठने कई केस - प्रोग्राम 1

अनाऊंसर: आज जॉन एन्करबर्ग शो में, यीशु कौन था? हालही में दोष निकालनेवाले विद्वान् बहस करते हैं कि यीशु नासरी ने कभी दावा नही किया कि वो इस्राएल का मसीहा है/ और कभी खुद के बारे में नही सोचा कि वो परमेश्वर का अद्भुत पुत्र है, लेकिन आज इस तरह के दोष निकालने की बात नही है, ऐसा क्यों है? और आगे हम किस तरह से जान सकते हैं कि यीशु के बारे में इतिहास के रेकोड्र्स सटीक हैं? हम किस तरह से जानेगे की यीशु के अनुयायीयों ने यीशु के बारे में इन कहानियों को नही बनाया? आज मेरे मेहमान हैं जो इन सवालों को जवाब देगे, वो हैं फिलोसोफर विलियम लैंक्रेग/ इनके पास फिसोलोसोफी में पी एच डी है, बिरमिंगहम इंग्लैंड से/ साथ ही डॉक्टर ऑफ़ थियोलोजी डिग्री है म्युनिक की यूनिवर्सिटी से/ आज हमारे साथ जुड़ जाए द जॉन एन्करबर्ग शो में/

****

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: प्रोग्राम में स्वागत है मैं हूँ जॉन एन्करबर्ग, आज हमारे साथ जुड़ने के लिए धन्यवाद/ मेरे मेहमान हैं डॉ विलियम लैंक्रेग, इ ये हमारे समय के सबसे अच्छेह फिलोसोफर हैं, ये जुड़े हैं डीबेट में, और आज हमारे संसार के बड़े दोष निकालनेवालों के साथ चर्चा करते हैं/ जो हमारे संसार के सबसे बड़े समानित यूनिवर्सिटी से पढ़े हैं, और डॉ क्रेग मैं खुश हूँ कि आप यहाँ आएं/ और हमारा सवाल जो हम पूछना चाहते हैं, बहुत महत्वपूर्ण हैं/ यीशु कौन था? हम किस तरह से जान सकते हैं कि चार सुसमाचार में जो बातें बताई गई हैं? दोष निकालनेवाले विद्वान बहस करते हैं कि यीशु नासरी ने कभी परमेश्वर का पुत्र या प्रभु होने का दावा नही किया, या किसी तरह से ईश्वरीय होने का, लेकिन आज, आप कहते हैं कि इस तरह के कोई दोष निकालनेवाली बात नही है/ बताइए क्यों?

डॉक्टर विलयम लैन क्रेग: इसका कारण यही है जॉन कि नए नियम के इतिहासकार, इस बात की सराहना करते हैं, कि सुसमाचार में भरोसेमंद लेख हैं, ऐतिहासिक व्यक्ति के बारे में, जिसे यीशु नासरी कहते हैं/ कई बार

इसे यीशु की यहूदी घोषणा कहते हैं, विद्वान् इस बात को जान गए हैं, कि यीशु नासरी को समझने के लिए सही पृष्टभूमि तो ग्रेको-रोमन माइथोलॉजी नही है/ लेकिन ये तो पहली सदी का पलेस्तीनियन-यहूदी विचार है/ यीशु यहूदी था/ और सब चेले यहूदी थे, और ये तो उस पृष्टभूमि पर यीशु नासरी को सही तरह से जाना जाए और उसका अर्थ समझे/ जब हम ऐसा करते हैं तो सुसमाचार ऐसे दिखते हैं कि ये सटीक और सही तरह के लेख है इन मनुष्य के जीवन और शिक्षा के बारे में/

यीशु नासरी प्राचीन संसार में बहुत से स्रोतों के लिए माना जाता है, यहूदी स्रोत, मसीही स्रोत, मोमेन स्रोत, और इन स्रोतों के सबसे शुरू के भाग नए नियम में रखे गए हैं/ हमारे दर्शकों को ये समझना होगा कि शुरू में इस नाम की कोई चीज़ नही थी, नया नियम/ केवल अलग अलग डॉक्यूमेंट थे,ग्रीक भाषा में जो पहली सदी में दी गई थी, जैसे कि लुका का सुसमाचार, प्रेरितों के काम,ग्रीस के कुरिन्थियों के लिए पौलुस की पहली पत्री, और फिर सैकड़ो साल बाद, चर्च ने सब डॉक्यूमेंट को एक साथ इकट्ठा किया, और नाम दिया नया नियम/

तो इस केस के अनुसार, शुरू के ही याने यीशु के जीवन के बारे में पहले के स्रोत हैं, ये तो वो हैं जो इकट्ठा कर नए नियम में रखे गए हैं/ चर्च ने बाद के और निचले स्थर के स्रोत छोड़ दिए/ जैसे कई अप्रोकपल सुसमाचार कहते हैं, जो कि ऐसे लेख थे जो यीशु के सैकड़ों साल बाद प्रकट हुए/ और सब जानते थे कि ये झूठे हैं/ और ये महत्वपूर्ण है क्योंकि यीशु के बारे में बहुत से अजीब और अलग तरह के दृष्टिकोण थे, ये तो सब आधारित थे इस बाइबल के बाहर के स्रोतों पर, जैसे मैंने कहा कि ये दुसरे और निचले स्थर के कम आधारित रहनेवाले स्रोत थे/

ये तो शुरू के स्रोतों से कम भरोसेमंद थे, तो ये समझना बहुत महत्वपूर्ण है कि जब हम इन शुरू के स्रोतों को देखते हैं, यीशु के बारे में, हम एक ही चक्र में इसका कारण नही देखते हैं, विद्वान् बाइबल को दूर करने की कोशीश नही कर रहे हैं, बाइबल से ही बताते हुए/ लेकिन वो तो केवल शुरू के इन डाक्यूमेंट्स की ओर जा रहे हैं/ जो पहली सदी में सौंपी गई थी, और ये यीशु नासरी की अद्भुत कहानी बताते हैं/ और वो सवाल पूछते हैं, ये डाक्यूमेंट्स कितने भरोसेमंद हैं?

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: जी, हमें इस पर चर्चा करनी होगी, क्योंकि अभी हमें सच्चाई के बोझ को देखना है, लोगों को बताइए कि और सबको ये समझना क्यों जरूरी है/

डॉक्टर विलयम लैन क्रेग: सबूत का बोझ तो बेचिदा है, क्योकि जब हम इन डाक्यूमेंट्स तक पहुंचते हैं, सवाल ये है कि क्या ये भरोसेमंद के रूप में लिए जाए, जब तक कि वो साबित किए जाए कि इन पर आधारित नही

रहा जा सकता है/ या आप इस अनुमान से शुरू करते हैं, कि ये भरोसेमंद नही है, जब तक कि ये साबित न हो जाए कि वो किसी बात पर भरोसेमंद है/ जैसे वो दोष साबित होने तक निर्दोष हैं, या निर्दोष साबित होने तक दोषी हैं, अब ये जैसे दिखता है उतना ही अद्‌भुत है, खासकर दोष निकालनेवाले इसी तरह से अनुमान लगते हैं कि सुसमाचार निर्दोष साबित होने तक दोषी हैं/ वो इस अनुमान के साथ शुरू करते हैं कि ये भरोसेमंद नही है,जब तक कि हम साबित न कर दे कि ये भरोसेमंद हैं, किसी भी मुद्दे पर/ और मुझे ऐसा लगता है कि वो इसे केवल ऐतिहासिक तरीके के रूप में देखते हैं/ इस अनुमान के साथ शूरू करना सही नही होगा कि सुसमाचार भरोसेमंद नही हैं/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: ऐसे कुछ कारण क्या हैं कि विश्वास करें कि सुसमाचार भरोसेमंद हैं?

डॉक्टर विलयम लैन क्रेग: मैं सोचता हूँ की बहुत से कारण हैं कि हम सोचते हैं कि सुसमाचार भरोसेमंद हैं/ चलिए दो कारण दूँ, इन में पहला हैं, जितना समय लगा, याने सुसमाचार को लिखने में, और इसमें जो घटनाएं लिखी गई हैं, इनके बिच का समय बहुत कम है, एतिहासिक स्रोतों से देखा जाए तो/ यहाँ तुलना करने के लिए, शुरू के स्रोत जो सिकन्दर महान के बारे में बताए गए हैं जो एरियन और पुलटार्च से आया था, इसके बारे में सिकन्दर की मृत्यु के लगभग 400 साल बाद लिखा गया/ और ये प्राचीन इतिहास को पूरी तरह से भरोसेमंद स्रोत माना जाता है/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: और उन्हें उसमें कोई समस्या नही है/

डॉक्टर विलयम लैन क्रेग: बिलकुल सही, इसके विपरीत, सुसमाचार और पौलुस के नए नियम के पत्र, तो इन घटनाओं के बाद पहली पीढ़ी के बारे में बताता है कि उन्होंने लिखे/ और गवाह तो अब भी जीवित थे/ साथ ही एक बहुत ही दिलचस्प उन्नति हुई है कंटेम्पररी नए नियम के विद्वानों द्वारा कि उन्होंने नए नियम के स्रोतों से परे भी देखा है, जिस पर ये नए नियम के लेखक आधारित थे/

कईबार लोग इस तरह से पूछते हैं कि यीशु के बारे में जो स्रोत हैं क्या वो नए नियम से बाहर की हैं? जी वो तो हैं, लेकिन इन स्रोतों के बारे में दिलचस्प बात तो ये है कि ये तो बाद की बात नही, ये तो शुरू से ही हैं, ये ऐसे स्रोत हैं जिस पर नए नियम के लेखक खुद आधारित थे/ और इसमें ऐसी बातें जुडी थी, द पैशन स्टोरी, यरूशलेम में यीशु के दू:ख उठाने और मृत्यु के अंतिम हफ्ते की कहानी/ जिसका उपयोग मरकुस ने किया अपने

सुसमाचार लिखने में, ये तो सच में बिलकुल शुरू के स्रोत थे, ये तो शायद यीशु के जीवन के दस साल के समयकाल में जाता है, वो आँखों देखे गवाह थे/

इसी तरह से, पौलुस ने ग्रीस के कुरिन्थियो के चर्च को पहली पत्री लिखी, वो बताता है उस पुरानी परंपरा से उसे दी गई और उसने अपने अनुयायीयों को दी, और इस परंपरा में यीशु की मृत्यु, गाढ़ा जाना, जी उठना और प्रकट होने के बारे में बताया गया है, बहुत से आँखों देखे गवाह के द्वारा/ और विद्वानों ने इस पुरानी परंपरा को बताया है, ये यीशु के क्रुसिकरण के बाद पहले 5 साल में लिखी है/ तो यहाँ अवसर बहुत कम है कि लोगों ने इसे अपने मन से बनाया होगा, प्राचीन इतिहास के दूसरों स्रोतों की तुलना में, सुसमाचार में बहुत अच्छे दावे हैं, कि भरोसेमंद लेखे इस में हैं, यीशु के जीवन और शिक्षा के बारे में/

ए एन शर्विन- वाईट तो एक ग्रेको रोमन इतिहासकार हैं, ये इतिहासकार तो यीशु के समयकाल के बारे में बताते हैं, और शर्वीन वाईट कहते हैं कि जब हम प्राचीन ग्रीक इतिहासकार के लेख को देखते हैं, जैसे हेरोड़ोतुस जिन्होंने ऐसे महान लोगों के आने के क्रम के बारे में मुल्यांकन किया, उन्होंने कहा कि टेस्ट बताते हैं, कि यहाँ तक कि दो पीढ़ी तो बहुत हम छोटा समयकाल है, कि ऐसे लेजिंडरी टेन्डन्सी को दूर करे, एतिहासिक घटनाओं को पूरी तरह से दूर कर दे/ याने जब हम सुसमाचार को देखते हैं, ये समयकाल तो सच में बहुत छोटा है, कि इन ऐतिहासीक बातों को दूर कर दे/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: आपने एक और कारण बताया है, कि हम सुसमाचार पर भरोसा कर सकते हैं, और आपके पास लूका से महान उदाहरण है, जो लूका और प्रेरितों का लेखक है/

डॉक्टर विलयम लैन क्रेग: जी, लूका नए नियम का लेखक है, जिसने बहुत सचेत होकर इतिहासकार जैसे लिखा है/ प्रेरितों के काम तो यरूशलेम में शुरू के मसीही चर्च का इतिहास है, जैसे वो पुरे भु-म्ध्य संसार में फैलता गया/ और लूका की सटीकता प्रेरितों की किताब में, ये तो बार बार प्रकट हुई है/ हालही में कॉलिन हिमर, जो उत्तम इतिहासकार थे, जो उन्हें नए नियम के अध्यन में लेकर आए, इन्होने बड़े सुन्दर रूप में अपनी किताब में बताया है,ड बुक ऑफ़ एक्ट इन द सेटिंग ऑफ़ हेलनिस्टिक हिस्ट्री में,हिमर प्रेरितों के काम की किताब में जाते हैं, पूरी तरह गहराई से, और एतिहासिक विवरण लेकर आते हैं, और इतिहास की गहराई की बात को हमें निकालकर बताते हैं, उन सारी बातों को जिन्हें प्राचीन संसार में सामान्य रूप तथ्यों के रूप में जाना जाता है, इतने विवरण से बताया कि ऐसा व्यक्ति जो सामने चित्र में आया था, जो इसे जानता है, और बार-बार,

बार-बार लूका की सटीकता प्रकट की गई है, सिकन्दर के कॉन शीप से यात्रा याने मिस्त्र से लेकर भूमध्य के किनारे के टापुओं तक, जहाँ पौलुस भी गया था वहां से उस जगह के स्थानिक नाम और इन टापुओं पर के अधिकारीयों के नाम, लूका इसे सही बताता है,बार बार लूका की किताब में लूका की एतिहासिक सटीकता प्रकट की गई है/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: चलिए मैं लोगों के सामने इसे पढ़ता हूँ, वो लूका के सुसमाचार का आरंभ इस तरह कहते हुए करता है, बहुतों ने उन बातों का जो हमारे बीच में हैं, इतिहास लिखने में हाथ लगाया है, जैसा की उन्होंने जो पहले ही से इन बातों के देखनेवाले और वचन के सेवक थे, हम तक पहुंचाया, इसलिए हे थियुफिलुस मुझे ये उचित मालुम हुआ कि उन सब बातों का समपूर्ण हाल आरंभ से ठीक ठीक जाँच करके, उन्हें तेरे लिए क्रमानुसार लिखूं, ताकि तू यह जान ले की वे बातें जिनकी तू ने शिक्षा पाई है, कैसी अटल है/

डॉक्टर विलयम लैन क्रेग: जी, यहाँ लुका सावधानी से इन बातों का अध्यन करता है, आँखों देखे गवाहों की इंटरव्यू लेता है, जो जानकारी के बारे में जानते थे, और ये दिलचस्प है कि लूका का ये दृष्टिकोण देखे ये उत्तम ग्रीक में लिखा गया है/ ये ऐसा है मानो ये उत्तम ग्रीक इतिहास के जैसे लिखा है/ थियोसिड्स आयर हेरोड़ोऊटस, और लूका दिखा रहा है कि मैं इस अद्भुत तरीके से लिख सकता हूँ, यदि चाहूँ तो व्यवसायिक इतिहासकार जैसे लिखू, और फिर वो आता है बहुत ही सामान्य ग्रीक पर, जाने जानेवाली ग्रीक पर/ अपनी बाकि कहानी में, लेकिन वो चाहता है कि पढनेबाले जान ले, कि यदि वो चाहते तो उत्तम ग्रीक इतिहासकार के रूप में इसे लिख सकता है/

साथ ही ये भी बताता है कि लुका के सुसमाचार के 16 वे अध्याय में, यहाँ लेखक अचानक फस्ट पर्सन का उपयोग करता है, अनेक वचन में, जैसे हम त्रोआस से जहाज खोलकर हम सीधे सुमात्रमे आए, हब हम प्रार्थना करने की जगह जा रहे थे, इत्यादि, ये इस तरह बताता है कि लुका भी पौलुस के साथ उसके काम में जुड़ जाता है, भू-मध्य नगरों की यात्रा में, और फिर वो पौलुस के साथ यरूशलेम में वापस आता है, जहाँ वो आँखों देखे गवाही की इंटरव्यू ले सकता था, जैसे उसने कहा था/

उत्तम इतिहासकार ए एन शर्वीन वाइट के अनुसार, प्रेरितों के काम तो इसकी ऐतिहासिकता के बारे में सबूत देते हैं/ ये तो रोमांचित करनेवाला है/ कोई भी कोशिश जो इसके इतिहास के बारे में इनकार करते हैं/ यहाँ तक कि विवरण की बात में, ये तो अब सटीक लगते हैं/ ये तो बहुत मजबूत शब्द हैं,और ये वही लेखक है/ जिसने

यीशु के जीवन के बारे में लिखा था, लूका का सुसमाचार जो कि उसकी पहली किताब है, फिर प्रेरित है, और प्रेरितों के काम में उसने बताए हुए विवरण पर आधारित रहनेवाली बात, हमें भरोसा देती है, कि इस लेखक पर भरोसा रखे, जहाँ तक यीशु के जीवन की बात आती है/

तो इस पहली बात को बताने के लिए, मैं सोचता हूँ कि ये पूरी तरह अन्याय होगा, कि सुसमाचार को इस अनुमान के साथ देखे, कि वो भरोसेमंद नही हैं/ चाहे हम अनुमान लगाए कि ये भरोसेमंद नही हैं, तो कम से कम हमें उनकी ओर सामान्य रूप में देखना चाहिए/ और सबूतों हमें वहां ले जाने देना है जहाँ वो ले जाना चाहते हैं/

और साथ ही नए नियम के इतिहासकारों ने एक क्रायटेरिया बनाया है, जिसे ओथेन्तिसिटी का क्रायटेरिया कहते हैं, जिसका उपयोग किसी खास कहने के लिए या यीशु के जीवन की घटनाओं के लिए हो सकता है, जो एतिहासिक संभावना बढ़ती है, कि ये सच में एतिहासिक हैं/ और इन क्रायटेरिया का उपयोग यीशु के जीवन की खास घटनाओं और बातों के साथ उपयोग करने से, हम खास भरोसा पा सकते हैं, कि ये सच में हुआ है/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: जी, ये तो साधन हैं जो इतिहासकारों ने उपयोग किए हैं, केवल नए नियम के डॉक्यूमेंट में ही नही, लेकिन दूसरी किताबों में भी/

डॉक्टर विलयम लैन क्रेग: बिलकुल सही, ये ऐसा क्रायटेरिया है जो किसी भी एतिहासिक स्रोत के लिए उपयोग हो सकता है, उनके एतिहासिक सही होने की बात को देखने के लिए/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: बिल मैं चाहता हूँ की लोग समझ ले कि एतिहासिक क्रायटेरिया जिसका टेक्सटुअल विद्वान् उपयोग करते हैं, कि निश्चित करें किसी एतिहासिक बात को या डॉक्यूमेंट में आई गई किसी बात को/ इसे बताइए/

डॉक्टर विलयम लैन क्रेग: ऐसे तो बहुत हैं जॉन, मैं केवल 6 बताऊंगा/

नंबर एक तो एतिहासिक फिट होगा, याने ये कहना कि ये घटना इन बात के साथ मेल खाती है, समय और जगह के बारे में/ सुसमाचार नैक्रनीस्टिक नही हैं, लेकिन ये मिलते हैं पहली सदी के यहूदी समाज और उनकी परंपरा से/

दूसरी बात, ये तो शुरू के स्वत्रंत स्रोत हैं, यदि कोई घटना या कोई बात, शुरू के स्रोतों में पाए जाते हैं, और साथ ही उससे हटकर दुसरे स्रोतों में भी पाए जाते हैं, तो ये संभवनाओं को बढ़ाता है, कि ये ऐतिहासिक घटना के बारे में बता रहा है/ क्योंकि ये सही होगा कि ये शुरू के स्रोत दोनों एक ही घटना के बारे में बता रहे हैं, यीशु के चमत्कार एक उदाहरण हैं, इन घटनाओं को बहुत बार अगल अगल रूप में जांचा गया है/ शुरू के स्रोतों में/

तीसरा क्रायटेरिया तो एम्बेरेस्मेंट का क्रायटेरिया है, यदि कोई घटना अजीब है, या किसी तरह से मनघडत हो, शुरू के मसीही चलन की ओर से/ तो ये कह सकते हैं कि ये उन लोगों द्वारा बनाई हुई है/ उदाहरण हो सकता है यीशु का बप्तिस्मा, युहन्ना बप्तिस्मादाता द्वारा/ युहन्ना लोगों को पापों की क्षमा के लिए बप्तिस्मा दे रहा था/ जब कि शुरू के विश्वासी भरोसा करते थे कि यीशु पाप रहित था/ तो वो कोई कहानी नही बनाते, कि यीशु युहन्ना के पास जाता है/ कि बप्तिस्मा ले और इसलिए, लगभग सब विद्वान् मानते हैं, कि ये ऐतिहासिक सच्चाई है कि युहन्ना ने यीशु को बप्तिस्मा दिया था/

चौथा क्रायटेरिया तो असमानता होगी/ यदि कोई घटना शुरू के यहूदी विचार के अनुसार न हो, और साथ ही बाद के मसीही विचार से नही मिलते हैं, तो ये तो ऐतिहासिक है, और यहूदी और मसीही नही है/ उदाहरण के लिए देखिए यीशु ने मनुष्य का पुत्र होने का दावा किया, ये तो शुरू के मसीही चर्च में उपयोग नही किया गया यीशु के लिए/ ये प्राचीन यहूदी विचारों में बहुत कम उपयोग हुआ है, और फिर भी सुसमाचार में ये तो यीशु का अपने बारे में पसंदीदा परिचय था/ जिससे ये संभवना ज्यादा होती है कि यीशु खुद को मनुष्य का पुत्र समझता था और खुद को यही कहता था/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: जी, चार सुसमाचार में 82 उसने खुद को ये कहा है/ इस बहुत बार कहा सकते हैं/

डॉक्टर विलयम लैन क्रेग: बिलकुल सही, 5 वा क्रायटेरिया है तो समेटीज़म का होना है/ याने हम कह सकते हैं कि ये तो सुसमाचार में हिब्रू और अरेमिक के चिन्ह पाना है/ सुसमाचार ग्रीक में लिखे गए हैं, याने जब हम ये चिन्ह देखते हैं अरेमिक के, या हिब्रू के, तो हम यीशु ने कहे असली शब्दों को देख रहे हैं, और उसके उपदेशों को देखते/

और अंत में 6 टा क्रायटेरिया तो कोहियरन्स होगा, यदि कोई घटना यीशु के बारे में पहले से स्थापित तथ्यों में फिट होती है, तो ये भी उस घटना के एतिहासिक संभवना को बढाता है/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: जी, ये क्रायटेरिया उपयोग किए जा सकते हैं, किताबों की खास घटनाओं के बारे में, ये तो मानो हम मोतियों को चुनते हैं/ इसे बताइए/

डॉक्टर विलयम लैन क्रेग: बिलकुल, ये क्रायटेरिया उपयोग हो सकते हैं, यीशु के जीवन की खास बातों और घटनाओं के बारे में, चाहे ये कही भी पाए जाए, हम इसे अपोक्रफ़ो सुसमाचार में उपयोग होते हैं, या धार्मिक किताबों में कि ऐतिहासिक मोतियों को चुन सके/ और दुसरे भरोसा न करनेवाले स्रोतों में/ ये महत्वपूर्ण है, क्योंकि इसका अर्थ होता है याने इसे साबित करने के लिए कहिए कि युहन्ना ने यीशु को बप्तिस्मा दिया/ आपको ये भी साबित करने की जरूरत नही, कि सुसमाचार भरोसेमंद हैं और यीशु बेथलहेम में जन्मा था/ या यीशु ने 5000 को भोजन दिया था/ ये सारी घटनाएं अपनी ही श्रमता में अपनी सच्चाई पर परखे जा सकते हैं/ एतिहासिक होने के इस क्रायटेरिया में/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: ठीक है बिल, चलिए कल्पना कीजिए कि हमारे पास है, ऐसे डाक्यूमेंट्स जो हमें भरोसेमंद जानकारी देते हैं और हमें टेक्सटयुअल साधन देते हैं कि हर घटना को परखते चले जाए, और इसके बारे में हम आगे चर्चा करेगे/ चलिए शुरू करते हैं कुछ बातों से जो हमारे होठों से आते हैं, कल्पना कीजिए कि स्वयं यीशु ने कहा है, क्या उसने कभी इजराइल का मसीहा होने का दावा किया है?

डॉक्टर विलयम लैन क्रेग: मैं सोचता हूँ कि यीशु नासरी ने इजराइल का मसीहा होने का दावा किया है/ और ये प्रकट किया गया उसके शब्दों में और उसकी क्रियाओं में भी/ मसीहा कौन था? मसीहा के बारे में विश्वास किया जाता था कि वो दाऊद के वंश से आनेवाला है, जो यरूशलेम में दाऊद के सिंहासन को फिर से स्थापित करेगा/ और इस्राएल के शत्रु के जुए जो फेंक देगा/ और उस देश में परमेश्वर के राज्य को स्थापित करेगा/ वो पुरे संसार में यहूदी और अन्यजाती का आदर समान रूप में पाएगा/ और ये अद्भुत है कि यीशु ने सोचा कि वो ये मसीहा है, वही व्यक्ति है/

ये शब्द मसीहा, ग्रीक में ये है क्रिस्टोस या क्राइस्ट/ और ये शीर्षक था जिसका उपयोग शुरू के विश्वासियों ने किया, की बताए कि वो यीशु के बारे में क्या विश्वास करते हैं/ उदाहरण के लिए मरकुस का सुसमाचार इन शब्दों से शुरू होता है/ परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह के सुसमाचार की शुरुवात/ और युहन्ना का सुसमाचार इस वाक्य के साथ खत्म होता है, ये इसलिए लिखा गया कि तुम विश्वास करो कि यीशु ही मसीहा याने परमेश्वर का पुत्र है, याने शुरू के मसीही चलन ने विश्वास किया कि यीशु ही मसीहा था, उसे मसीहा कहा, और सच में, ये

यीशु के साथ इतना करीबी रूप में जुड़ गया, कि ये तो आगे उसका उपनाम ही हो गया, यीशु मसीह/ इसका अर्थ है मसीहा यीशु/

अब सवाल ये है, कि यीशु नासरी ने कभी खुद को मसीहा होने का दावा नही किया/ तो फिर बताइए कि\ शुरू के विश्वासियों को ये विचार कहाँ से मिला? मसीहा को तो इस्राएल के शत्रु के जुए जो तोडना था और इस केस में, इसका अर्थ है रोम, उन्हें शर्मिन्दा कर मृत्यु न दे, किसी अपराधी के रूप में, यीशु नासरी की बात तो इस पर विश्वास करना असंभव बना देती कि वो मसीहा है, यदि वो खुद इसके बारे में कोई दावे नही करता/ याने शुरू के विश्वासी चर्च का विश्वास कि यीशु ही मसीहा है, संभवत: इसी बात पर जाता है जहाँ यीशु खुद मसीहा होने का दावा किया/ जिस पर वो विश्वास करते हैं कि ये उसने साबित किया मुर्दों में से जी उठने के द्वारा, जो क्रुसिकरण की बात के विषय में है/ याने शुरू से ही मैं सोचता हूँ, कि ये पूरी तरह संभव है कि ये मसीहा होने के दावे यीशु ने ही किए होगे, और जब हम खास बातों को देखते हैं, यीशु के जीवन के बारे में, तो यही बात आती है/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: जी, मैं सोचता हूँ कि एक उदाहरण जिसके बारे में सब विद्वान् सहमत होगे, ये तो सच्चाई है, युहन्ना ने सवाल पुछा, यीशु से, और यीशु ने युहन्ना को जवाब दिया, कि वो मसीहा है या नही/

डॉक्टर विलयम लैन क्रेग: जी, सुसमाचार में हमारे पास एक कहानी है कि युहन्ना बप्तिस्मादाता को जेल डाला जाता है/ और वो यीशु नासरी को संदेश भेजता है/ कहा, क्या आनेवाला तू ही ही है या हम किसी और की बाट देखें? ये तो बहुत शुरू के स्रोत में ही जांचा गया, जिसे मत्ती और लूका बताते हैं, और इस कहानी की क्रेडिबलीटी है, इसे तो एन्ब्रेसमेंट के क्रायटेरिया पर भी परखा गया है/ क्योंकि ये दिखाता है कि युहन्ना बप्तिस्मादाता का विश्वास यीशु में डगमगा रहा था/ शुरू का चर्च युहन्ना के बारे में ऐसे वाक्य नही कहता, जब तक कि ये सत्य न हो/

यीशु ने युहन्ना को उत्तर दिया, “जो कुछ तुम ने देखा और सुना हैं जाकर युहन्ना से कह दो, कि अंधे देखते हैं, लंगड़े चलते-फिरते हैं, कोढ़ी शुद्ध किए जाते हैं, बहिरे सुनते हैं, मरदे जिलाए जाते हैं, और कंगालों को सुसमाचार सुनाया जाता है/ और धन्य है वह जो मेरे विषय में ठोकर न खाए/ अब यीशु ने सीधा क्यों नही कहा कि हाँ मैं ही हूँ जो आनेवाला था, ये इतना घुमाकर कहना क्यों? खैर जॉन हमने जवाब मिलता है डेड सी स्क्रोल से, कुमरान के असिन समुदाय की ओर से/ डेड सी स्क्रोल्स में, उन्होंने मसीहा के बारे में शर्तों को लिखा

है, जो यीशु ने बताई शर्तों से मिलता है/ वो कहते हैं कि आकाश और पृथ्वी अपने मसीहा को सुनेगी/ वो अनन्तकाल के सिंहासन पर धर्मी का आदर करेगा/ वो बंधवों को आजाद करेगा, अंधों की आँखों को खोलेगा/ और जो झुके हुए हैं उन्हें वो उठाएगा/ और प्रभु महिमामय काम करेगा, जो नही किए गए हैं, जैसे उसने कहा है कि वो जख्मी को चंगाई देगा/ वो मुर्दों को जिन्दा करेगा/ वो क्लेशों में पड़े लोगों को सुसमाचार सुनाएगा/ यीशु युहन्ना बप्तिस्मादाता को बता रहा है, खासकर मसीहा होने का चिन्ह/ उस समय के यहूदी विश्वास करते थे, कि मसीहा के आने पर ये सब होगा/ याने युहन्ना बप्तिस्मादाता की इस कहानी में, मुझे लगता है कि साबित करनेवाले सबूत हमारे पास हैं, की यीशु नासरी विश्वास करता था कि वो काफी समय से प्रतिज्ञा किया गया यहूदी मसीहा है/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: दोस्तों हम बस इससे शुरू कर रहे हैं, हम चर्चा कर रहे हैं, यीशु के होठों से आए शब्दों के बारे में, सबसे पहले हम देख रहे हैं, क्या भरोसेमंद हैं, हम कैसे जानेगे, और हम देख रहे हैं कि क्या यीशु ने खुद को मसीहा कहा है, अगले हफ्ते हम इसे आगे देखेगे, इससे आगे बढ़ेगे और चर्चा करेगे कि यीशु मसीह दावा किया कि परमेश्वर का पुत्र है, और मनुष्य का पुत्र होने के दावे क्या हैं? और मैं आशा करता हूँ कि महत्वपूर्ण जानकारी पाने के लिए आप जुड़ जाएगे/

****

हमारे टीवी प्रोग्राम देखने के लिए मुफ्त में डाऊनलोड कीजिए जॉन एन्करबर्ग ाो एप

"घ्द्धठ्ठन्र् द्यदृ ठ्ठड़ड़ड्ढद्रद्य ख्ड्ढद्मद्वद्म क्ण्द्धत्द्मद्य" ऋ ख्ऋद्मण्दृध्र्.दृद्धढ

@JAshow.org

क्दृद्रन्द्धत्ढण्द्य 2015 ऋच्ड्क्ष्